रामाष्टकम् ३

{॥ रामाष्टकम् ३ ॥}

भजे विशेषसुन्दरं समस्तपापखण्डनम् ।

स्वभक्तचित्तरञ्जनं सदैव राममद्वयम् ॥ १॥

जटाकलापशोभितं समस्तपापनाशकम् ।

स्वभक्तभीतिभङ्जनं भजे ह राममद्वयम् ॥ २॥

निजस्वरूपबोधकं कृपाकरं भवापहम् ।

समं शिवं निरञ्जनं भजे ह राममद्वयम् ॥ ३॥

सहप्रपञ्चकल्पितं ह्यनामरूपवास्तवम् ।

निराकृतिं निरामयं भजे ह राममद्वयम् ॥ ४॥

निष्प्रपञ्चनिर्विकल्पनिर्मलं निरामयम्॥

चिदेकरूपसन्ततं भजे ह राममद्वयम् ॥ ५॥

भवाब्धिपोतरूपकं ह्यशेषदेहकल्पितम् ।

गुणाकरं कृपाकरं भजे ह राममद्वयम् ॥ ६॥

महावाक्यबोधकैर्विराजमनवाक्पदैः ।

परब्रह्म व्यापकं भजे ह राममद्वयम् ॥ ७॥

शिवप्रदं सुखप्रदं भवच्छिदं भ्रमापहम् ।

विराजमानदैशिकं भजे ह राममद्वयम् ॥ ८॥

रामाष्टकं पठति यः सुकरं सुपुण्यं

व्यासेन भाषितमिदं शृणुते मनुष्यः ।

विद्यां श्रियं विपुलसौख्यमनन्तकीर्तिं

सम्प्राप्य देहविलये लभते च मोक्षम् ॥ ९॥

॥ इति श्रीव्यासविरचितं रामाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

Proofread by Madhavi U mupadrasta at gmail.com

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

Last updated त्oday

http://sanskritdocuments.org

% Author : Shri Vyasa
% Language : Sanskrit
% Subject : philosophy/hinduism/religion
% Proofread by : Madhavi U mupadrasta at gmail.com
% Latest update : December 28, 2012
% Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com
% Site access : http://sanskritdocuments.org
%
% This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study
% and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of
% any website or individuals or for commercial purpose without permission.
% Please help to maintain respect for volunteer spirit.
%

We acknowledge well-meaning volunteers for Sanskritdocuments.org and other sites to have built the collection of Sanskrit texts.
Please check their sites later for improved versions of the texts.
This file should strictly be kept for personal use.
PDF file is generated [October 13, 2015] at Stotram Website